हिन्दी साहित्य

टेस्ट-3

(प्रश्न पत्र-II)

Mentorship Program
Nehru Vihar

DTVF / OPT-24 HL-2403

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): ARUN MALVIYA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 26.07.24

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

7	8	0	6	7	1	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) बरु वै कुब्जा भलो कियो।
सुनि सुनि समाचार ऊधौ मो कछुक सिरात हियो।।
जाको गुन, गति, नाम, रूप, हरि हार्‌यो, फिरि न दियो।
तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँसि हँसि लोग जियो।।
सूर तनक चंदन चढ़ाय तन ब्रजपति बस्य कियो।
और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लियो।।

संदर्भ:- यह पद्यांश हिन्दी साहित्य के अलंकार सम्राट सुरदास जी के काव्य से लिया है। जो रामचन्द्र शुक्ल जी के भ्रमरगीत सार में दिखाई देता है।

प्रसंग - सूरदास की गोपिया अपनी वाग्विदग्धता शैली से उद्धव के उपर व्यंग्य कर रही है।

व्याख्या - गोपिया कहती है कि कुब्जा के प्रति उन्होने जो उद्धार किया है। तथा उनके संग जो वे लीला रच रहे है उसकी जानकारी उद्धव उनको दे रहे है तथा इ. गोपियो का हृदय इससे चिंतित है। जिनका गुण, गति, नाम रुप और हरि ने जिसको अपनी शरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में लिया उसका उद्धार किया है। उन्होंने अपनी मंद मुस्कान से गोपियों की हँसी एवं मन को अपना बना लिया है। सिर पर चंदन का तिलक लगाए वह आ रहे हैं और उन्हें देखकर सभी नगरवासी हँस रहे हैं।

विशेष –
① ब्रज भाषा का प्रयोग
② गोपियों की तिक्तता, कठोर तथा टेढ़ेपन से व्यंग्य।
③ देशज शब्दों का भी प्रयोग है।
④ दोहा पद्धति का अनुसरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ख

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियां तुलसीदास जी की कालजयी रचना रामचरितमानस से ली गई है।

प्रसंग → भक्त कवियों पर आई विपदा और उस विपदा के समापन का राह महाकवि तुलसीदास दिखाते है।

व्याख्या → तुलसीदास कहते है कि यदि भवसंकट की स्थिति है तथा दुःख बढ़ रहा है। तो आपको तीर्थ यात्रा पर जाना चाहिए। और यदि ज्ञान, वैराग्य, सब कुछ झूठ-सा प्रतीत हो रहा है और भी विभिन्न समस्याओं ने यदि चारों तरफ से घेर रखा है। इन सबसे निकलने हेतु और यदि सुख सदैव पाना है तो राम नाम का बारम्बार भजना शुरू कीजिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष →
① अवधी भाषा का प्रयोग
② दोहा प्रक्रिया।
③ अंत में शब्दों का एकात्म।
④ पेट-कुपेटक में द्वन्द्व समाज

प्रासंगिकता
→ ① अध्यात्म राह में मददगार उदा. राधावल्लभ सम्प्रदाय के प्रेमानन्द महाराज द्वारा भी जप पर अधिक बल।
→ सिक्ख सम्प्रदाय > सतनाम का जप करने पर बल।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरु मिलहुगे राम।

संदर्भ: उपर्युक्त पद्यांश ~~भक्तिकाल के ज्ञानमार्गी कवि~~ हिन्दी साहित्य की पद्य विधा से ली गई है।

प्रसंग → राम (ईश्वर) की प्राप्ति के लिए कवि द्वारा किए तप का वर्णन है।

व्याख्या: कवि कहते है कि आँखे से लगातार आँसू बह रहे है और अब वे आँसू आँख मे ही रह गए है। इस प्रकार की हालत हो गई है।

कवि इसे आगे उदाहरण से स्पष्ट करते है कि जैसे कोई पपीहा निरंतर पीऊ-पीऊ की रट लगाए रखता है। उसी प्रकार कवि भी अपने अराध्य की भक्ति कर रहे है परंतु वे चाहते है कि उन्हें उनके राम के दर्शन हो जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष :- ① अवधी एवं पंचमेल बिचड़ी भाषा

② उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण ।

③ देशज शब्दों का भी प्रयोग

उदाहरण - रहट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रदेय यह छायावादी मूर्धन्य रचनाकार निराला के काव्य कुकुरमुत्ता (1943) से लिया गया है।

प्रसंग यहाँ कुकुरमुत्ता अपने मुँह से अपनी विशेषताओ तथा महानताओ का बखान कर रहा है। (गुलाब-कुकुरमुत्ता संवाद)

व्याख्या कुकुरमुत्ता यहाँ गुलाब से कहता है कि है गुलाब! तू जिसके भी पास गया है वह फिर सुध में नही रहा उसे फिर अपनी स्थिति बचाकर वहाँ से भागना ही पड़ता है। जैसे मैदान मे औरत जानिब को छोड़ जाता है और तबेले मे जैसे टट्टू तोड़कर घोड़ा भागता है वैसे ही लोग तुझसे छूट भागते है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तू गुलाब केवल बड़े शादी, राजा और अमीरों का ही प्यारा रहा है और इसलिए तू साधारण जन से दूर है।

विशेष:- (i) खड़ी बोली
(ii) देशज शब्द - ठट्ठ आदि।
(iii) ध्वन्यात्मक तारतम्यता का शानदार प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) तुम सभ्य हो, 'मार्केट' जिनका सात सागर पार है,
पर ग्राम की वह हाट ही उनका 'बड़ा बाज़ार' है।
तुम हो विदेशों से मँगाते माल लाखों का यहाँ,
पर वे अकिंचन नमक-गुड़ ही मोल लेते हैं वहाँ।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत व्याख्यातित पद्यांश में शहरीकरण और ग्रामीण संस्कृति के द्वन्द्व को दिखाया गया है

व्याख्या :- कवि कहते है कि "मार्केट" अर्थात् अंग्रेजी संस्कृति क्या तुम सभ्य हो जो सात सागर पार से आई हो
मार्केट की तुलना में गांव के हाट का वर्णन को ही कवि बड़ा बाज़ार कहते हो कुछ लोग और 'मार्केट' तुम विदेशो से लाखो रुपयो का माल मंगवाते हो परन्तु ये ग्रामीण संस्कृति के जो हाट है वे नमक और गुड़ जैसी सभी सामान्य लोगो को दैनिक कार्यों मे काम आने वाले खाद्यान्न पदार्थ यही से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खरीदते हो।

विशेष :- ① संस्कृति पर गहन चिंतन
② अंग्रेजी शब्द प्रयोग उपमार्केट
③ संवेदनात्मक पक्ष पर अधिक महत्व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) पद्मावत में इतिहास और कल्पना की सह-उपस्थिति पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

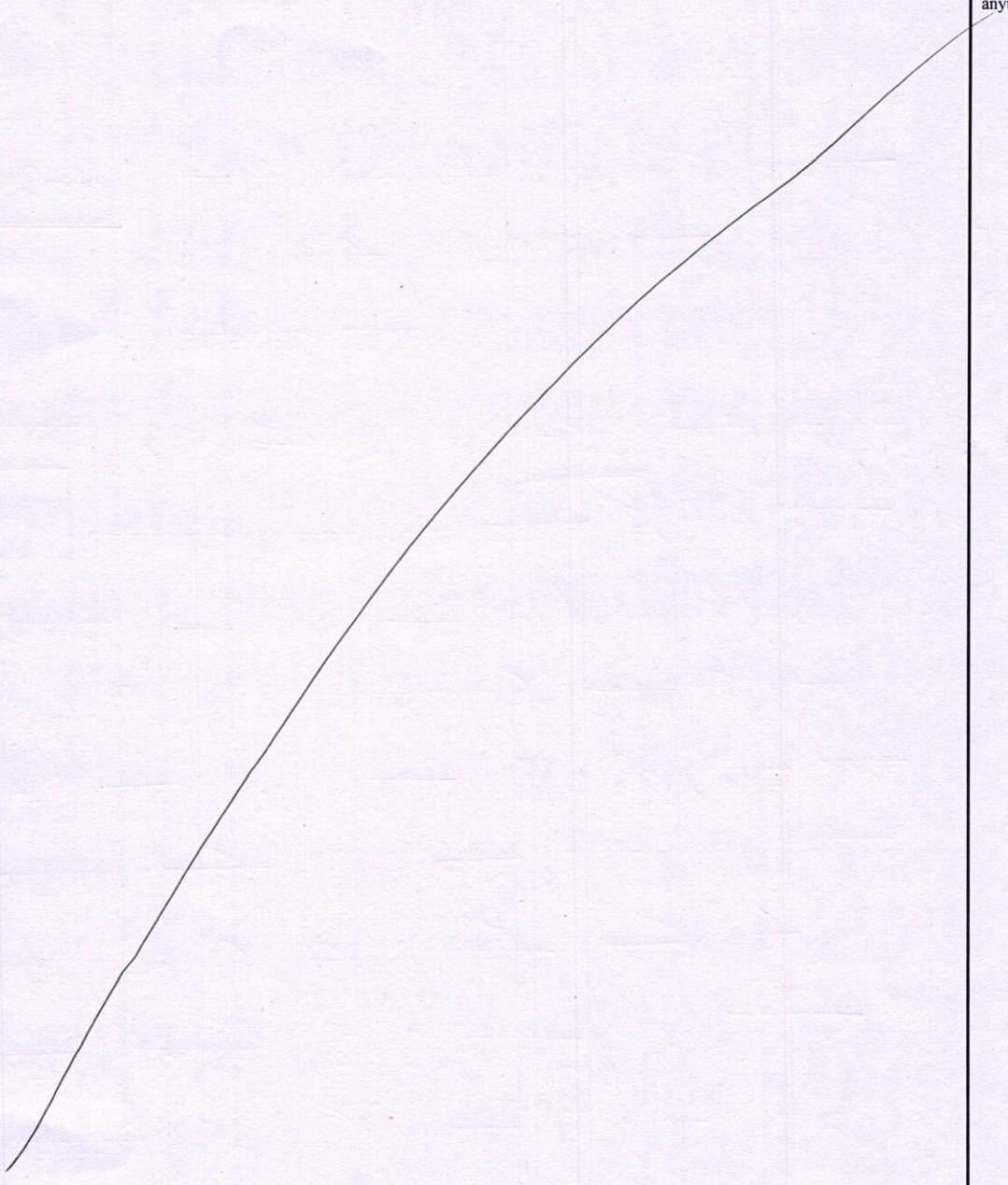

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिहारी' की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) "कबीर की वाणी वह लता है, जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई है।" इस मत के परिप्रेक्ष्य में कबीर के काव्य का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल के प्रतिनिधि ज्ञान मार्गी शाखा के कविभक्त कबीरदास जी की वाणी पर नाथो की अक्खड़ता तथा भक्ति में वैष्णव जनों की माधुर्यता का गुण फैले हुए रूप में दिखाई देता है।

कबीर की वाणी रूपी लता का आधार योग का क्षेत्र

कबीरदास नाथपंथी सम्प्रदायो की विचारधारा से प्रभावित थे। जो उनकी रचनाओ वाणी में भी प्रमुखता से दिखता है। नाथो की वाणी मे कठोरता, तिक्तता तथा सीधे-सपाट बिना लागलपेट के बोलने की प्रवृत्ति दिखती है। जो कबीर की वाणी में ऐसे दिखती है:-

"जो तू बामन बामिनी का जाया,
आन बाट काहे नही आया।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संवेदनागत स्तर पर कठोरता के साथ ही उनकी वाणी में शिल्पगत स्तर पर भी तिक्त शब्दों की भरमार दिखती है, जो नाथपंथियों से मिली कठोरता प्रदान करती है -

उदाहरण :-

"नारी की झाई पड़त, अंधा होत भुजंग।"

योग क्षेत्र में मिली विरासत रूपी इस वाणी में जब गुरु रामानंद के पश्चात् 'भक्ति का संपर्क' हुआ तब उनकी वाणी में भी भक्ति का माधुर्य गुण अंकुरित होने लगा। जैसे :-

"मैं तो कुता राम का 'मुतिया' मेरे नाम।
गले राम की जेवड़ी, जित खिंचो तित जाऊ।।"

उपर्युक्त दोहे के संदर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद जी ने भी लिखा है कि कबीर में भाषा को अपने सुविधा अनुसार मोड़ देने की अद्भुत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्षमता है। यहाँ द्विवेदी जी ने 'गुतिया' शब्द का 'प्रेमतत्व' को जोर दिया है।

इसके अतिरिक्त कबीर की वाणी पर "वैष्णव जनी सम्प्रदाय" की भी दार्शनिक प्रभाव के कारण भाषा में सौम्यता प्रदर्शित हुई है। यह सौम्यता उनकी भाषा को निर्दोष/मासुम बो बनाती है, साथ ही कलात्मक उन्नति भी प्रदर्शित करती है। यथा :-

"बकरी पाती खात है, काढ़ी तिनकी खाल।
जे बर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल।"

कबीर के यहाँ भक्ति की यह शानदार भाषा उनके काव्य में 'गौरवमयी प्रज्वलन' उत्पन्न करती है और यह सभी भाषागत चमत्कार उनके काव्य में संवेदनागत स्तर पर भक्ति की महत्ता के कारण ही दिखाई देता है। इस संदर्भ में भाषा की शालीनता इस दोहे में भी दिखती है।-

"चलती चाकी देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबित बचा न कोय।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की वाणी सौंदर्य को देखते हुए उन्हें द्विवेदी जी ने 'भाषा का डिक्टेटर' कहा तथा वे कहते हैं कि " कबीर ने अपनी भाषा से जैसा चाहा वैसा बुलवा लिया । या तो सीधे सीधे या धक्का देकर ॥

स्पष्टतः कबीर का भावगत काव्य की वाणी वह लता का स्वरूप है जिसमे खेत तो 'योग' का है परन्तु उसमें बीज 'भक्ति' का ही है। वे सगुण - निर्गुण का एकीकरण करते हुए भी दिखते हैं:-

" का सगुण का निर्गुण, प्रेम चाहिए साँच।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कामायनी (1936) छायावाद के चतुर्स्तंभ के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचना है। जिसमें प्रसाद ने मनु-श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से आनन्दवाद/समरसतावाद को स्थापित किया है।

कामायनी का महाकाव्यत्व

कामायनी के महाकाव्य के संदर्भ में हिन्दी साहित्य में लंबी वाद-विवाद की प्रक्रिया रही। इस संदर्भ में विभिन्न हिन्दी समीक्षको ने अपने विचार प्रस्तुत किए। तत्पश्चात आज एक "साझी समझ" इस संदर्भ में विकसित हुई।

सर्वप्रथम आचार्य शुक्ल ने इस संदर्भ में अपना मत रखा। उन्होने बताया कि यह रचना पूर्ण रूप से महाकाव्य की कोटि में नही आती है क्योंकि महाकाव्य होने की आधारभूत शर्ते यह पुरी नही करती। यथा:-

(1) घटना, चरित्र, वर्णन तत्व की प्रधानता नही।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) एक निश्चित क्रम में उचित सर्गों के साथ नहीं जैसे रामचरितमानस है।

(3) गद्यात्मकता संबंधी तथ्य आदि।

परंतु लंबे समय पश्चात डॉ. नगेन्द्र तथा मुक्तिबोध जैसे रचनाकारो ने कामायनी पर शोध किया एवं डॉ. नगेन्द्र ने कामायनी के अध्ययन की समस्याओं के आधार पर नवीन प्रतिमानो की व्याख्या की।

औदात्यीकरण की प्रक्रिया पर कामायनी के संदर्भ में कह सकते है :-

क) औदात्य उद्देश्य :- आनन्दवाद / समरसतावाद की स्थापना
↳ विस्तृत लोककल्याण का भाव

" औरो को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पावो।
अपने सुख को विस्तृत करलो, सबको सुखी बनाओ॥"

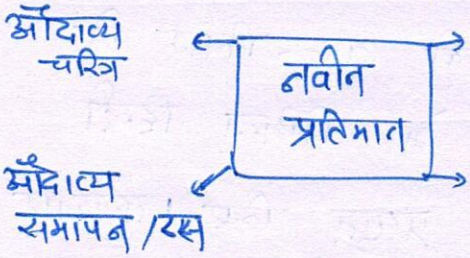

ख) औदात्य कथानक :- शुरुआत चिंता सर्ग से फिर आशा, श्रद्धा, इडा, को बाँधते हुए अंत में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहस्य, दर्शन सर्ग से होकर आनंदसर्ग तक पहुँचती है।

" हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह।
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।।"
-चिंता सर्ग

ग) औदात्य चरित्र : यदि मनु को नायक माने तो वह सतत रूप से औदात्यीकरण की ओर बढ़ते वाला नायक

→ यदि श्रद्धा को नायक माने तो वह तो शुरु से ही औदात्य चरित्र है।

" हृदय की अनुकृति बाह्य उदार-- —— -"

" नारी केवल तुम श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।"

घ) औदात्य रस : निर्वेदमूलक शांत रस की प्राप्ति।

डॉ. नगेन्द्र के अलावा मुक्तिबोध ने भी "कामायनी: एक पुनर्विचार" में इसकी शिल्प गत महाकाव्यात्मकता पर विचार किया तथा इसे भावनाप्रधान रचना की संज्ञा दी।

आज हिन्दी साहित्य जगत में कामायनी को हिन्दी का पहला और अंतिम "भावप्रधान महाकाव्य" रचना की श्रेणी में रखा गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता के मूल मंतव्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

हरिजन गाथा, हिन्दी साहित्य जगत में 'आधुनिक कबीर' के नाम से प्रख्यात कवि नागार्जुन की सामाजिकता संबंधी कालजयी, मार्मिक, वस्तुनिष्ठ रचना मानी जाती है। जो वर्तमान संदर्भ में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

'हरिजन गाथा' कविता का मूल मंतव्य

(क) दलित वर्ग की चेतना का प्रतीक :- बिहार के बेलछी में 1977 का जातीय नरसंहार का चित्रण है। जिसमें तथाकथित उच्च जाति के लोगो द्वारा दलित समाज के घरों, लोगो को जिंदा जलाने की घटना का वर्णन है। वे अपनी शुरुआती पंक्ति में कहते हैं:

"ऐसा तो कभी नही हुआ था,
एक नही, दो नही, तीन नहीं,
तेरह के तेरह अभागे अकिंचन,
× × × × × × × × × × ×
जिंदा जला दिए गए हो,
सो सो मनुपुत्रो द्वारा।

ख) शासन- व्यवस्था का मिलीभगत का भी नागार्जुन द्वारा चित्रण किया है, कि किस तरह शासन तंत्र

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी उच्च जाति के पक्ष में रहती है।

"ऐसा तो कभी नहीं हुआ था,
पहुँचा दी गई हो कई बार खबरे
थाने मे संभावित दुर्घटनाओ की।"

(ग) दलित वर्ग में नवीन ऊर्जा की लहर: बेलछी काण्ड के पश्चात् जब एक माँ के पेट से नया बच्चा जन्म लेता है तो समाज उसे आशा की नज़र से देखता है।

रविदासी कुटिया के संत द्वारा बच्चे के संबंध में की गई भविष्य वाणी उस समाज में नवीन ऊर्जा की उमंग भर देती है।

'कृष्ण की तरह बच्चे के चित्रण की कहानी
जिसमें उसकी प्रतिभा का वर्णन किया
दो वृद्धो के द्वारा।"

(घ) 'जातीय अस्मिता' का गुणगान तथा शोषण के प्रति विद्रोह का चित्रण हरिजन गाथा का मूल कथ्य है। अंत में कवि नागार्जुन हिंसक क्रांति जैसी बाते भी लिखते है जहाँ उन्होने विभिन्न शस्त्रों के माध्यम से 'दलित चेतना जागृति' का कार्य किया।

"तलवार, बरछी, कटार, गोला।
गोला, कटार, बरछी, तलवार।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हरिजन गाथा की वर्तमान में प्रासंगिकता

(1) हथरस में 'मनीषा' नामक युवति से हुई बलात्कार, जलाने की घटना। यह गाथा इस प्रकार के जातीय शोषण के खिलाफ है।

(2) मध्यप्रदेश में तथाकथित दलित जाति के व्यक्ति पर ऊंचवर्गीय व्यक्ति द्वारा "पेशाब" करने जैसा घिनौना कृत्य। वही एक व्यक्ति को ट्रक से बांधकर घसिटना।

(3) आज भी समाज में जातिय हिंसा और शोषण देखता है। राजस्थान के IPS अधिकारी की शादी में "घोड़ी चढ़ने संबंधी" मामले देखे गए।

हरिजन गाथा समाज में जातीय शोषण के प्रति हिंसा प्रकट कर उसका विरोध करने पर बल देती है। यह समाज में चेतना जगाए रखने की प्रेरणा देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन आधुनिक काल के श्रेष्ठ रचनाकारों में से एक है जिन्होंने अपनी लेखनी से जनजीवन, धरती तथा मानवता प्रेम के साथ प्रकृति के सौंदर्य पर भी अपनी कलात्मक छाप प्रस्तुत की है।

नागार्जुन के काव्य में जनजीवन के चित्रण

(क) **आमजन के प्रति प्रतिबद्धता:** नागार्जुन ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के सबसे निचले तबके तथा आमजनों के ऊपर, उनकी समस्याओं और संवेदना को लेकर लेखनी चलाई है।

(ख) **राजनीतिक व्यंग्य:** आम लोगों की समस्या को केन्द्र में रखते हुए नागार्जुन ने अपने समय की राजनीतिक शक्तियों के विरुद्ध भी तीखे तेवर दिखाए हैं। वे नेहरू जी पर लिखते हैं-

"आओ रानी हम ढोएंगे पालकी, यही राय हुई है
जवाहरलाल की।"

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी के बाद भ्रमण पर वे लिखते हैं:-

"हरिजन गिरीजन भूखों मरते, डोले फिरे वन-वन में।
तुम रेशम की साड़ी ओढ़े, उड़ती फिरो गगन में।।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) जनता के कवि: नागार्जुन किसी विचारधारा/प्रतिबद्धता की यांत्रिकता में बंधने की बजाय आमजन के पक्ष में काव्य सृजन करते हैं।

"होंगे दक्षिण होंगे वाम,
जनता को है, बल रोटी से काम ॥"

नागार्जुन का धरती और मानव प्रेम के प्रति प्रेम

(क) धरती प्रेम:

(i) प्रकृति के सभी रूपों के प्रति उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। चयनात्मक सौंदर्य उनके काव्य में विरले ही दिखता है। अकाल और उसके बाद कविता में भी प्रकृति जैसा दिखा है।

"उदाहरण: मादा सुअर को मादर-ए-हिंद की बेटी कहा है।

(ii) बादल को घिरते देखा है। काव्य में प्रकृति का रमणीय। सौंदर्यात्मक चित्रण प्रस्तुत करते कहते हैं:

"अमल धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) धरती के प्रति प्रेम में उन्होने विभिन्न पशु पक्षियो के प्रति प्रेम को भी शामिल कर उसे विस्तृत रूप प्रदान किया है।

" कई दिनो तक चुल्हा रोया, चक्की रही उदास।
कई दिनों तक कानी कुतिया भी सोई उनके पास ॥
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियो की गश्त।
कई दिनों तक चुहो की भी हालत रही शिकस्त ॥"
- अकाल और उसके बाद

(ख) नागार्जुन के काव्य में मानव-प्रेम

(i) दाम्पत्य जीवन का सुंदर चित्रण: रीतिकालीन मानसिकता के विपरित नागार्जुन का प्रेम देहमूलक नहीं वरन् "भावनापरक" प्रेम है। उनकी रचना "सिंदुर तिलकित भाल" में पति अपनी पत्नि को याद करते हुए कहते है-

"मुझे याद आता है,
तुम्हारा सिंदुर तिलकित भाल॥"

(ii) मानव प्रेम का अन्य चित्रण एक बेटी और उसके पिता के प्रेम के रूप में भी प्रकट होता है जहां कवि कहते है:

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या
उसकी भी सात साल की बेटी
जिसके लिए लरका रखे है
गियर के ठीक ऊपर हुक पे
चुड़िया गुलाबी ।।"

3) नागार्जुन का मानव प्रेम सर्वव्यापी है जिसमें मानव के साथ साथ प्रकृति भी सहभागी हो गई है तथा वह अकाल के पश्चात अपने प्रेम भाव को इस रूप में प्रकट करती है:

"दोने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद,
× × × × × × × × × × ×
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें, कई दिनों के बाद ।।"

स्पष्टतः नागार्जुन कहते थे कि वे जनकवि है जो अपनी बात को स्पष्टता से रखते थे। उनकी प्रकृति प्रेम चित्रण, जनजीवन, धरती और मानव प्रेम के रूप हिन्दी साहित्य जगत में अद्वितीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य की परिकल्पना' पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल के सगुण भक्ति धारा के रामभक्त कवि ने विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस (अवधी भाषा) की रचना की। जिसमें उन्होंने रामराज्य रूपी सुशासन की अवधारणा प्रस्तुत की।

गोस्वामी तुलसीदास की "राम राज्य की परिकल्पना"

आशय: यह अवधारणा वर्तमान की सुशासन अवधारणा का रूप देखी जा सकती है। जिसमें शासक वर्ग को जनता के प्रति जवाबदेह तथा नैतिक शासन की व्यवस्था करते से हो

रामचरित का रामराज्य की अवधारणा में तुलसीदास जी कहते है कि इस व्यवस्था में किसी भी प्रकार का दुःख, पीड़ा नही होगा। यहा राजा, प्रजा के प्रति पूर्ण जिम्मेदारियो का निर्वहन करेगा।'

" दैहिक दैविक भौतिक तापा,
राम राज्य काहुंहि नही व्यापा।"

- रामचरितमानस

अर्थात शारीरिक, मानसिक, भौतिक कष्टो से रहित राज्य।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह विचार तुलसीदास जी के अपने समय की भी मूल समस्या थी। जहाँ उन्होंने किसान, बेरोजगार आदि की समस्याओं को दिखाया था। वे चाहते थे कि राज्य इन समस्याओं पर ध्यान दे।

"खेती न किसान को बनिक को बनिज न
~~चाकर को न चाकरी~~ ×× ×××××
न भिखारी को भिख भली, न चाकर को चाकरी।"

अर्थात् स्पष्ट रूप में रामराज्य की अवधारणा तुलसीदास की 'यूटोपिया' का ही एक रूप माना जा सकता है जिसमें वे कल्पना करते हैं कि सभी प्रजा सुख की अधिकारी हो। राजा तथा प्रशासक वर्ग नैतिक अभिकर्ता के रूप में जिम्मेदारी निभाए।

यह अवधारणा रामचरितमानस को सर्वश्रेष्ठ रचना में शामिल करती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस संदर्भ में कहा है - "तुलसीदास का रामराज्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक आदर्श राज्य की कल्पना का द्योतक है जहाँ प्रजा अतिसुख की काम्य हो जाती है"

रामराज्य का विचार आमजन का अधिक सशक्त होने की अवधारणा को प्रस्तुत करता है। ये मूल्य आज भी हमारे समाज में प्रासंगिकता बनाए हुए है।

रामराज्य की कल्पना ही आज वर्तमान में सुशासन की दृष्टि को संजोकर रखी है। 'न तत द्वितीयम अस्ति' अर्थात् वह दूसरा नही है, का भाव रामराज्य की परिकल्पना पूरी करता है क्योंकि इसमें सभी प्राणियो के एकत्व की बात कही है।

स्पष्टत: तुलसीदास जी का रामराज्य आज की पीढी तथा समाज एवं विशेषत: राज्य को भी आदर्श, नैतिक तथा लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की प्रतिबद्धतता को याद दिलाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ब्रह्मराक्षस" कृति मुक्तिबोध के संकलन "चाँद का मुह टेढ़ा है" से ली गई है। जिसमें उन्होंने मध्यमवर्गीय वर्ग (बुद्धिजीवी) का आत्मसंघर्ष दिखाया है तथा प्रतीकात्मक अर्थों की अभिव्यंजना की है।

ब्रह्मराक्षस में अस्तित्ववादी मान्यताओं और खण्डित व्यक्तित्व के प्रतीक के तत्व

अस्तित्ववादी मान्यताएं व्यक्ति को अत्यधिक महत्व देती है। जहां वे समाज को व्यक्ति से भिन्न मानती है। सार्त्र, कीर्केगार्द, कामू आदि इसके प्रणेता है।

↓

ब्रह्मराक्षस में अस्तित्ववाद का खण्डन

→ व्यक्ति का महत्व नही बल्कि समाज का भी महत्व। ब्रह्मराक्षस अकेला शहर से दूर कोहरी। बावड़ी में रह रहा है और आत्मसंघर्षरत है अंत में वह मर भी जाता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" चुपचाप वह अपना गणित करता रहा,
ओं! मर गया।"

मुक्तिबोध ने दिखाया है कि यदि व्यक्ति अकेला रहता है तथा केवल आत्मचेतस भाव से युक्त होता है तब उसका अंत भी अत्यधिक त्रासद होता है।

उदाहरण: चढ़ना, लूढ़कने और घायल होने वाले पदांश।

खण्डित व्यक्तित्व का प्रतीक

↳ क्योंकि ब्रह्मराक्षस ने अपने पास जो ज्ञान प्राप्त किया है वह बस उसे अपने अहंकार के कारण खुद तक ही सीमित रखता है। इस संबंध में वह सूर्य, चन्द्रमा तथा बादलों को भी अपने अहंकार को दिखाता हुआ व्यक्त किया गया है।

⇓

खण्डित व्यक्ति इसलिए भी क्योंकि वह शहर से दूर बावड़ी में अकेला जीवन निर्वासित कर रहा है तथा अपने मैल को साफ करने की कोशिश कर रहा परंतु हर बार असफल हो रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस उसके कहते हैं:

"उसका उन दिनों यदि होता
मुझसे मिलन
तो मैं उसे बताता उसका सत्य।"

मेरे मत के अनुसार यहाँ मुक्तिबोध ने ब्रह्मराक्षस को अस्तित्ववादी मान्यताओं को स्वीकृत करते हुए मुक्तिबोध की "व्यक्ति-समाज अवधारणा" में समाज को अधिक महत्व देने का प्रयास किया।

खंडित व्यक्ति का प्रतीक भी मुक्तिबोध ब्रह्मराक्षस को दिखाते हैं परंतु उसमें वे संभावना भी रखते हैं कि यदि वह आत्मचेतस से विश्वचेतस हो जाए तो समस्या समाधान हो जाए। इसलिए कवि स्वयं ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य होना चाहते हैं:

"मैं ब्रह्मराक्षस का
सजल उर शिष्य होना चाहता हूँ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

संदर्भ:- हिन्दी साहित्य की पद्य श्रृंखला से उद्धृत है

प्रसंग:- वर्तमान स्थिति की चिंता का वर्णन है।

व्याख्या:- कवि कहते है कि नीकी दई अनाकनी की समस्या आज भी व्याप्त है जो आज फीकी पड़ चुकी है और इस मत को त्यागकर ही हम भक्ति मे उद्धार पा सकते है

विशेष:- ① ब्रजभाषा का प्रयोग
② औकारान्त बहुलता
③ छंदात्मक प्रवाह
④ सरल, सहज एवं बोधगम्य भाषा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

सन्दर्भ → प्रस्तुत पद मलिक मोहम्मद जायसी के काव्य ग्रंथ पद्मावत से लिया गया है।

प्रसंग → नागमति के विरह वेदना के संबंध में चित्रण किया गया है।

व्याख्या :- नागमति कहती है कि यह भाद्रपद माह उनके लिए बहुत कष्टकारी हो रहा है क्योंकि वह अपनी आपके कैसे समझाए। उनको अपने प्रिय की याद आ रही है। और उसके शारीरिक, मानसिक चुभन मानो ऐसी प्रतीत होती है जैसे किसी विषधारी जीव ने डंस लिया उनकी आँखे अपने प्रिय को देख रही हो इन्हीं सभी के बीच में बादलो में बिजलियां भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

चमक रही है और यह सब नायिका के विरह को और बढ़ा रहा है।

विशेष :-

① ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग

② देशज शब्द का प्रयोग

③ चित्र सजीव है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि धनसार सँजीवनि दधिसुत किरन भानु भइ भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ : प्रस्तुत पद्य सूरदास जी के भ्रमरगीत सार से लिया गया है जिसका संकलन आचार्य शुक्ल ने किया।

प्रसंग – गोपियो की कृष्ण के बिना जो दशा हो गई है उसका वर्णन किया गया हो

व्याख्या बिना कृष्ण के गोपियो को किसी भी प्रकार की सुध नही रही हो पहले के दिनो में यह वृक्ष की छाया शीतल लगती थी परंतु अब यह भी विषम ज्वाला की लगती हो

पहले यमुना के किनारे कमल खिलते थे, पक्षी चहचहाते थे तथा भंवरे गुंजहे थे। पवन, पानी आदि मिलकर सेत्र की पारिस्थितिकी के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए संजीवनी का कार्य करते थे।
परंतु अब वैसा नहीं है।
इसलिए हे उद्धव आप
माधव से कहिये वे गोपियों के
पास आए तथा उनसे पुनः वे सभी
रासलीलाएं यमुना मे पुनः खेले।

विशेष :-
(i) ब्रजभाषा प्रयोग
(ii) अलंकार योजना
(iii) छंद की श्रेष्ठता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।
नरनाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मनभावत पायो न कैं।
'तुलसी' कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयाल सुनैं।
जेहि देह सनेह न रावरे सों अस देह धराइ कै जाय जियैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश रामचरितमानस तुलसीकृत रामायण से अंशीकृत है।

प्रसंग → राम की अलौकिक शक्तियों का वर्णन तुलसीदास ने किया है।

व्याख्या → दशरथ के पुत्र राम जो कि पुराणों में भी उसी प्रकार से प्रसिद्ध है जिनका गुणगान नर नाग सुर-असुर सभी करते है। सभी उनसे ही हर्षित होते है।

तुलसी दास हाथ जोड़ कर कहते है कि राम उन पर भी कृपा करे। जिसे शरीर में प्रेम न हो उसके शरीर में भी प्रभू राम प्रेम की पीर उत्पन्न कर दे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

- अवधी भाषा
- चौपाई का प्रयोग
- राम की महिमा का गुणगान
- ध्वनि नादात्मक का गुण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ:- यह पद्यांश मैथली शरण गुप्त की रचना भारत- भारती (1913) से लिया गया है। जो "वर्तमान-खण्ड" से उद्धृत है।

प्रसंग:- इसमें कवि ने साहित्य की वर्तमान स्थिति पर बल दिया है तथा प्राचीन गौरव शाली अतीत की महिमा वर्णित है।

व्याख्या:- गुप्त जी कहते है कि जिस देश में पहले के समय साहित्यकार सुगायक थे तथा वेदो की श्रुति को याद कर सबको सुनाते थे। मध्यकाल के क्षति के पश्चात अब वे उल्लू के जैसे बस टीलो पर बैठकर बोलते है अर्थात् जिसका अधिक महत्व एवं प्रभाव नहीं होता है वैसे साहित्य की रचना कर रहे है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आगे गुप्त जी नवजागरण लेकर कहते है कि हिन्दूजन (आह्वान) तुम ऐसे सोते रहोगे और मौज करोगे तो तुम्हारी सांस्कृतिक अस्मिता पर खतरा उत्पन्न होगा।

विशेष →
- प्राचीन गौरव संस्कृति का बखान
- इतिवृत्तात्मक, अभिधा शैली
- खड़ी बोली प्रयोग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) सूर की काव्य-कला के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

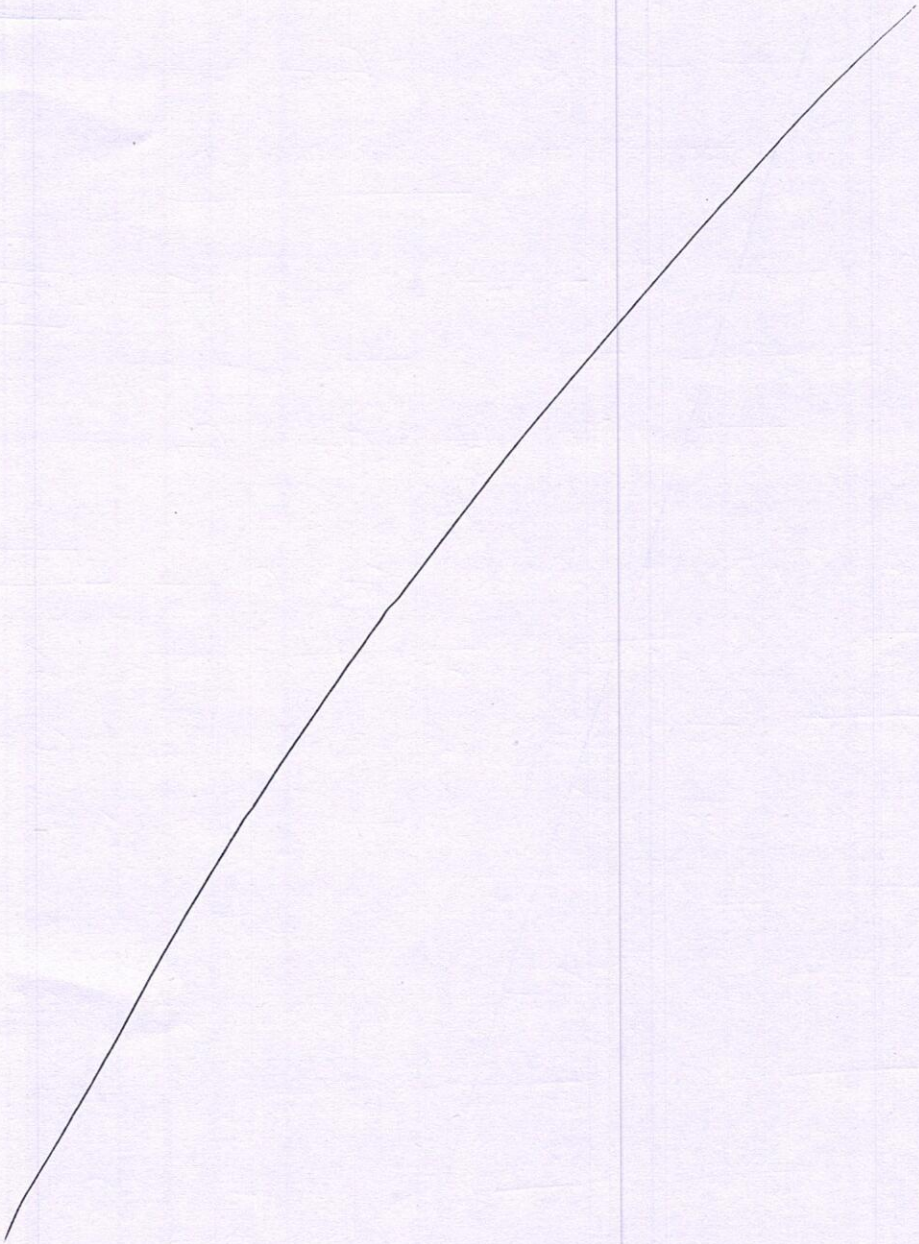

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

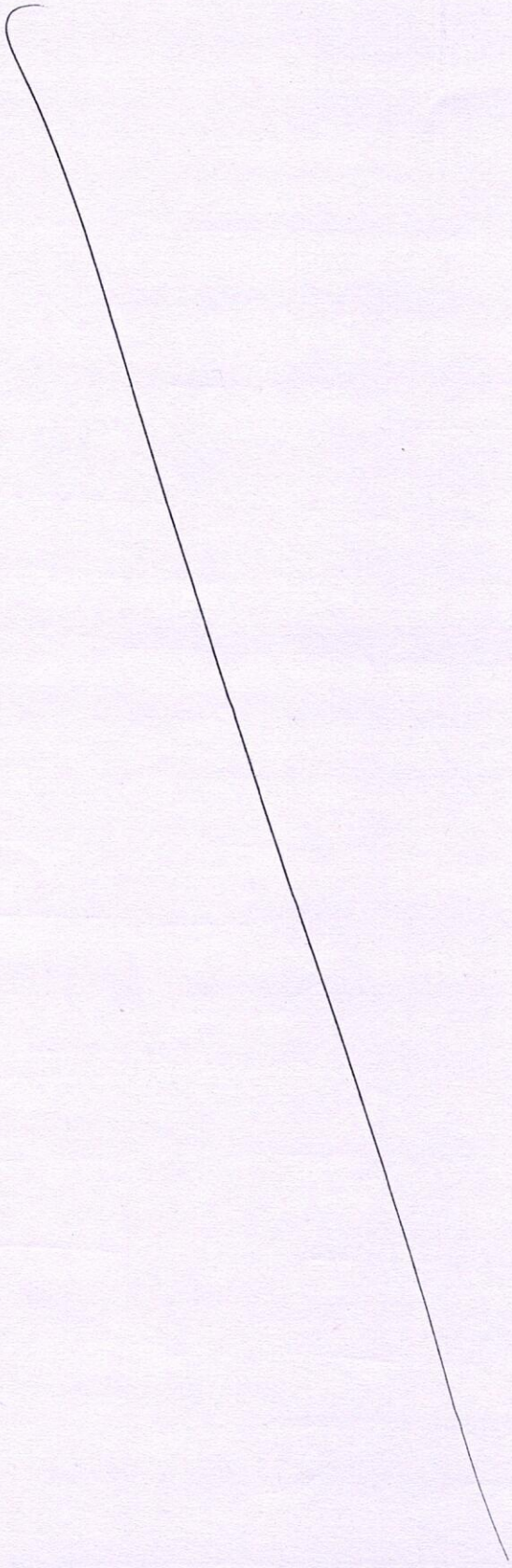

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

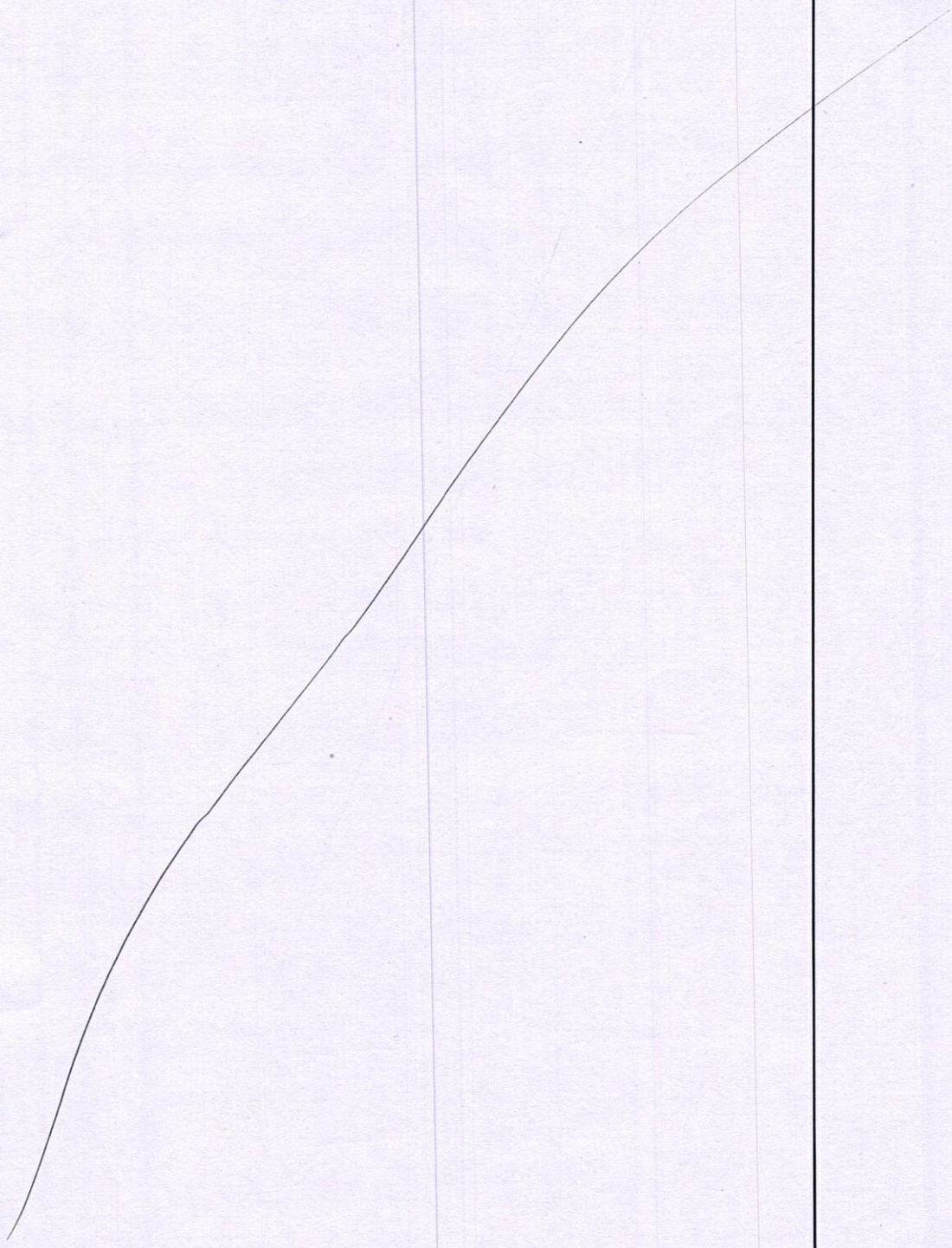

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

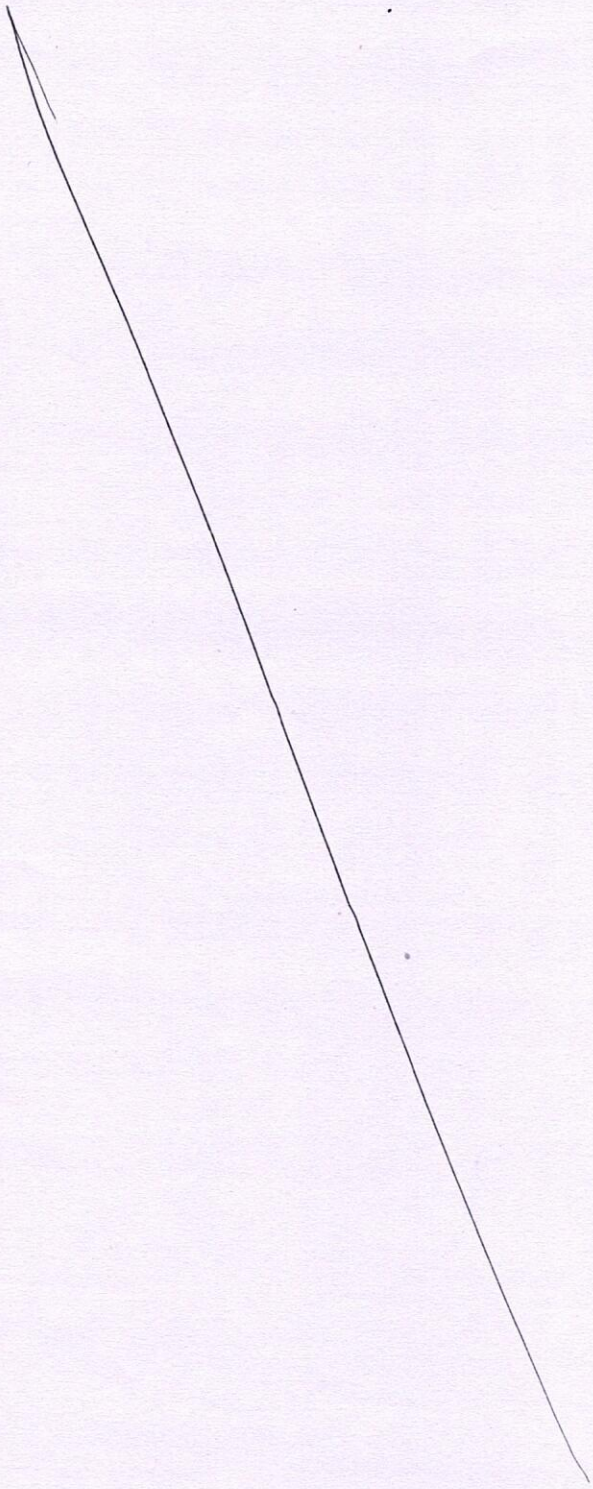

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

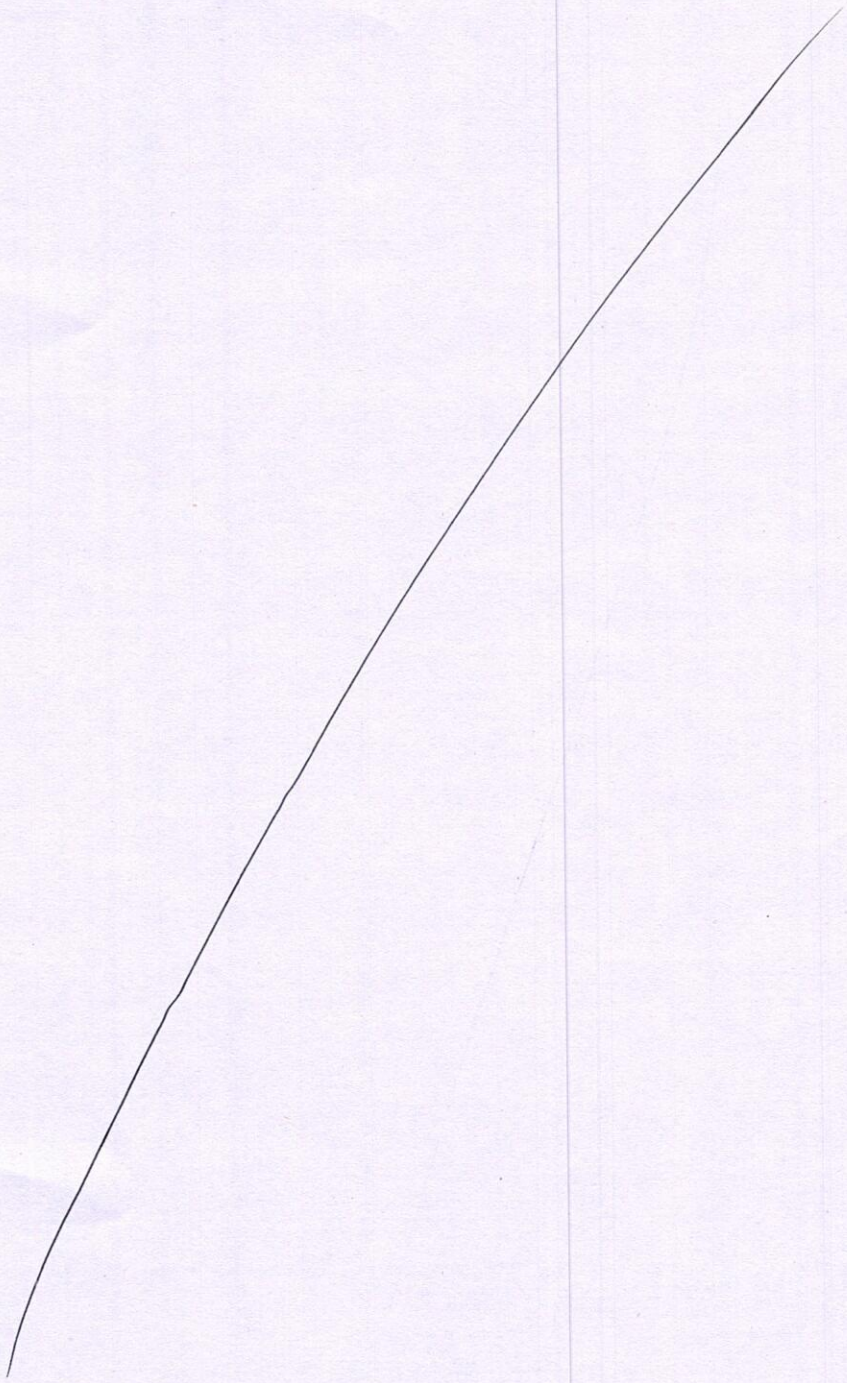

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

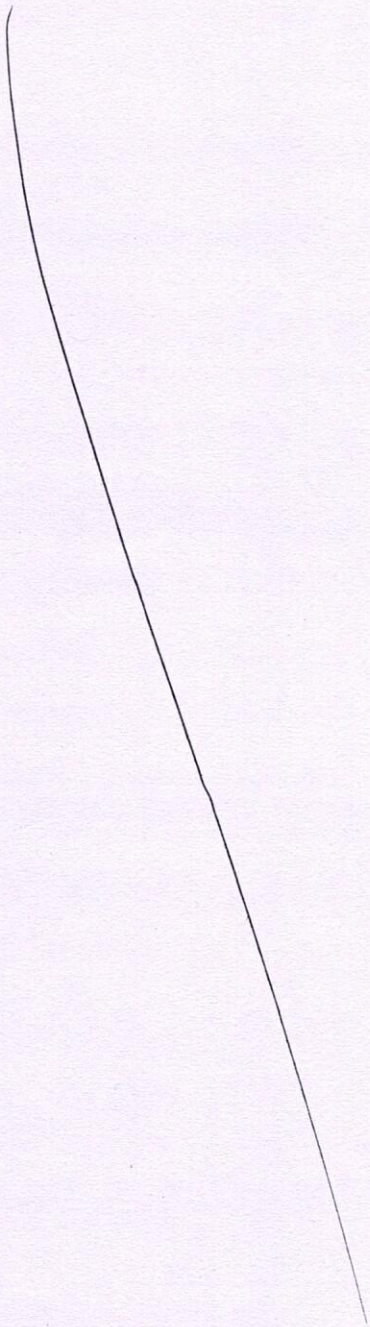

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

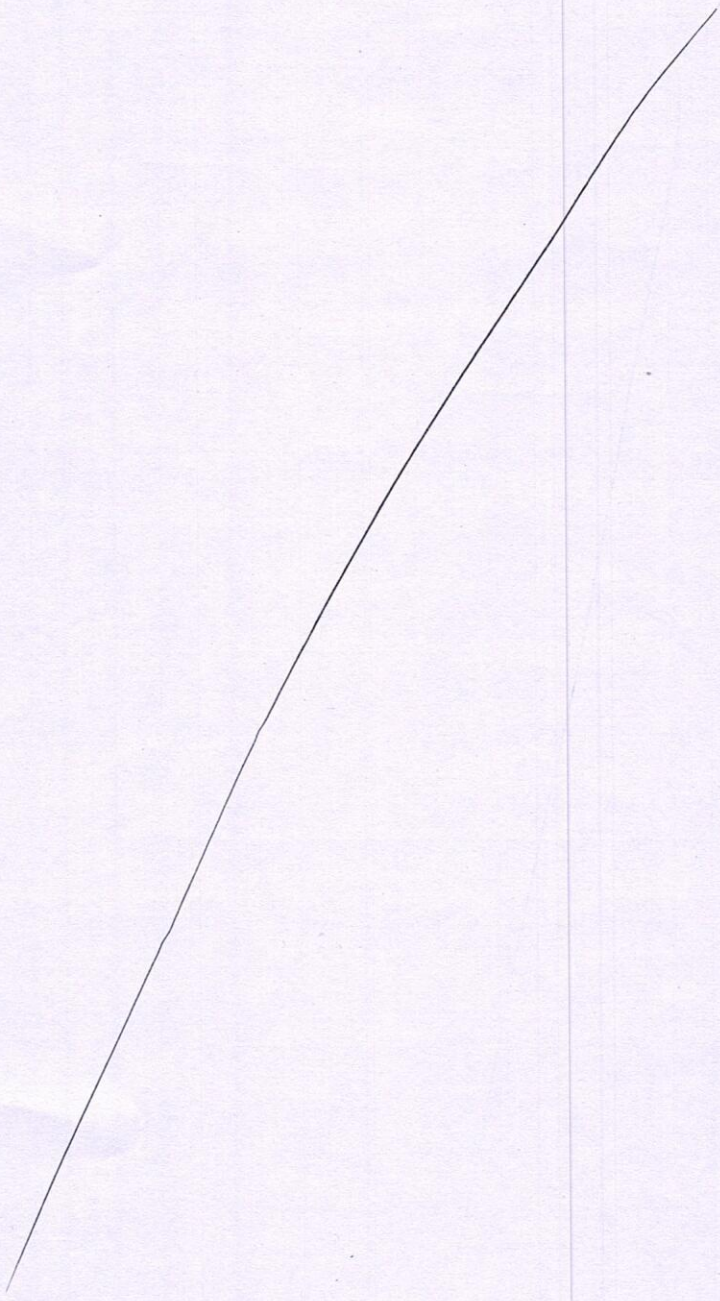

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संवदेना के धरातल पर 'भारत-भारती' की सीमाओं को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

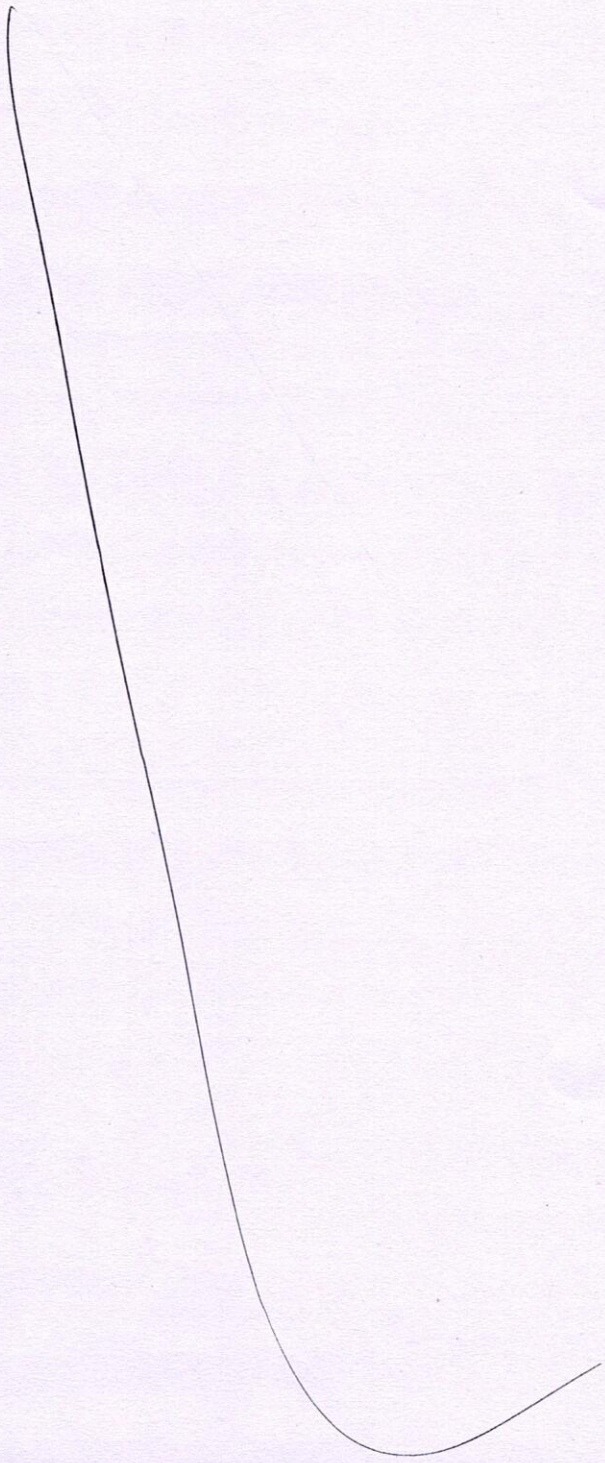

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

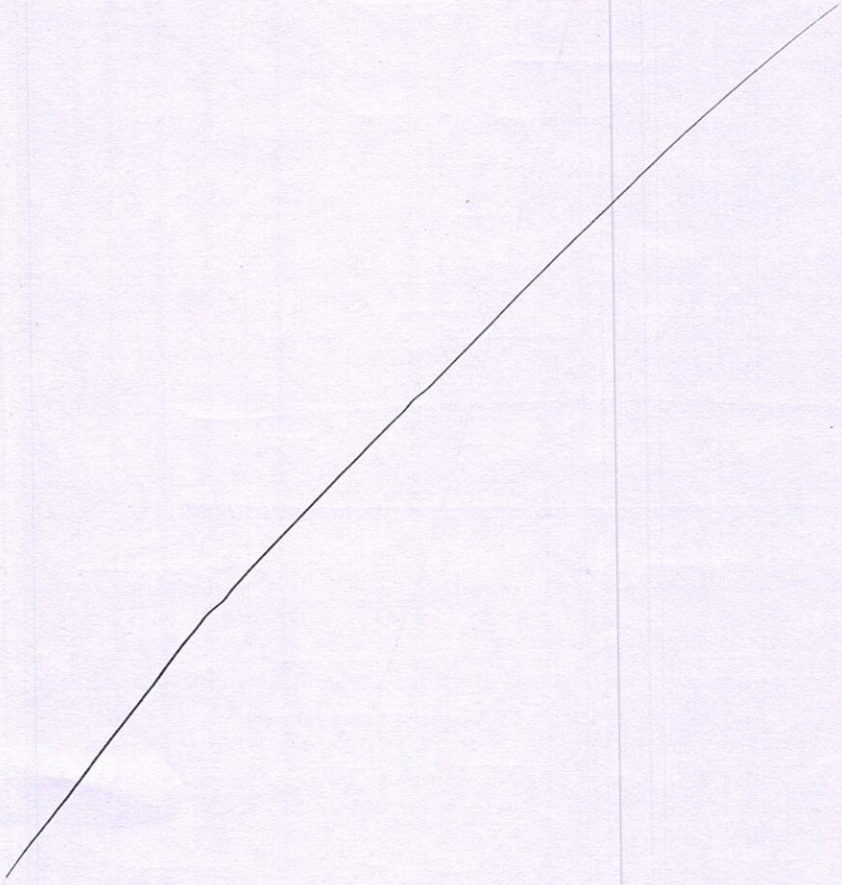

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

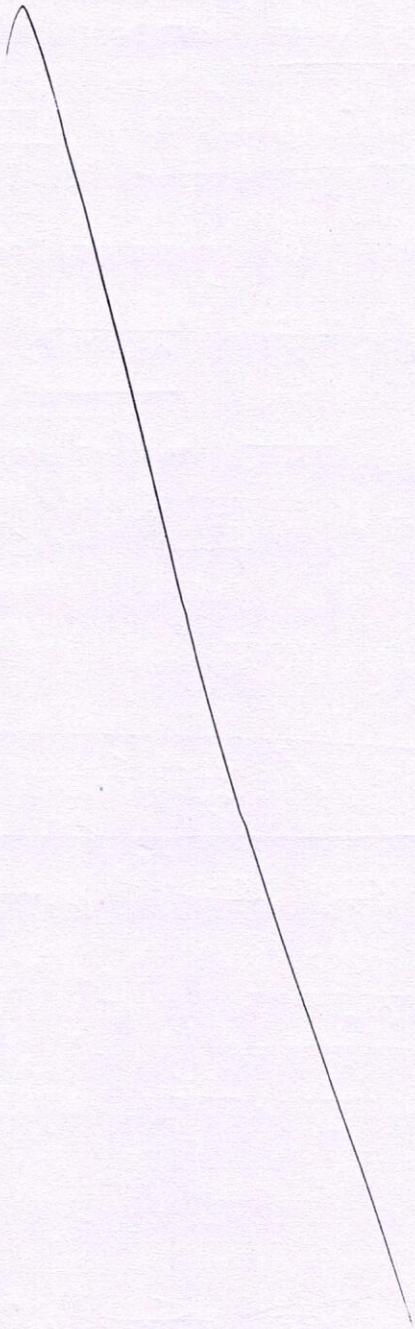

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल के सूफी संत धारा के प्रेममार्गी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत (1524 ई.) की रचना की जिसमें उन्होंने 'तसव्वुफ' तथा ऐतिहासिकता का मिश्रण किया।

पद्मावत में अन्योक्ति या समासोक्तिपरक रचना संबंधी विवाद

अन्योक्ति का अर्थ है जहाँ कवि प्रस्तुत कथन की जगह अप्रस्तुत कथन पर अधिक बल देता है। वही समासोक्ति रचना से आशय जहाँ अप्रस्तुत कथन का अर्थ गौण एवं प्रस्तुत कथन का महत्व अधिक होता हो।

पद्मावत के संबंध मे कहा जाता है कि ~~xxx~~ इसमें दोनो शिल्पो के तत्व मिलते है।

पद्मावत में अन्योक्ति के तत्व

→ पद्मावत के अंत में विभिन्न पात्रो की प्रतीकात्मकता को दिखाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नागमति यह दुनिया धंधा -- ×××××

जैसे: पद्मावती के परमात्मा (बुद्धि), नागमति को दुनिया धंधा, ~~शैतान~~ राघव चेतन को शैतान अलाउद्दीन को माया, रतनसेन को हृदय

इस आधार पर पदमावत् को एक सूफी रचना मानकर 'तसव्वुफ' प्राप्ति ही रचना का मूल उद्देश्य मान लिया जाता है। परंतु यह विवादास्पद है क्योंकि कुछ समीक्षको ने इन पदो को आक्षेपित पद माना है।

पदमावत् मे समासोक्ति के तत्व

↳ विजय देवनारायण साही जैसे रचनाकारो ने पदमावत् में 'तसव्वुफ' को एक मुहावरा माना तथा उसे मूलत: समासोक्ति काव्य माना। जिस संदर्भ में प्रमाण:

(1) पूरी रचना को पढ़ने पर, कही भी अहसास नही होता कि किसी अन्य उक्ति की बात की गई। कुछ तत्वों को छोड़

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दे तो रचना पूर्णतः लौकिक जगत की लगती है।

② पदमावत इतिहास और कल्पना के सुन्दर समन्वयन को दिखाता है। जिसमे राजा रत्नसेन, पद्मावत, अलाउद्दीन खिलजी संबंधी कथाए कर्नल टॉड के 'राजपूतो के इतिहास' तथा आइन-ए-अकबरी के अनुरूप भी दिखती है।

③ वास्तविक रूप में जायसी ने पदमावत में इहलौकिक संसार पर अधिक बल देने की बात कही है। वे नागमति वियोग मे दिखाते है।
"हाड़ि कोयला भई कंत सनेहा। रक्त न मासू इन देहा।।"

④ विजयदेवनारायण साही ने 'जायसी' रचना में इस संदर्भ में कहा कि यदि तसव्वुफ का अर्थ निकाल भी दे तो यह रचना पर कोई प्रभाव नही पड़ेगा। और परस्पर विरोधी बात भी अन्योक्ति से उत्पन्न होती है जैसे- रानी नागमति को "दुनिया धंधा" बताया है वहीं पदमावत को 'पद्मावती'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

का रूप परंतु यह दोनों एक साथ रहती है तथा सती भी एक साथ होती हो।

साही की यह बात आज हिन्दी साहित्य जगत में सामान्य रूप से मान्य है कि पद्मावत अध्योक्ति नहीं समासोक्ति रचना है और इसमें तसव्वुफ को बल एक मुहावरे के तौर पर देखना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिनकर जैसे रचनाकारो ने "राम की शक्तिपूजा' मे नारी चेतना पर बात कही तो वही प्रगतिवादी, नारीवादी लेखिकाओ ने नागमति के विरह-वर्णन को मध्यकालीन दासता का प्रतीक माना।

नागमति के विरह वर्णन का चित्रण

1. पति की गलती होने के बाद भी वह उससे निरपेक्ष प्रेम करती है।
2. पति का किसी अन्य स्त्री पर मोहित होने का अधिकार जायसी ने दिया है परंतु नागमति को अति आदर्शवादी घेरे में खड़ा किया है
3. स्वयं को नागमति राख होने के लिए तत्पर है तथा जिस मार्ग से उसके पति आ रहे है वहाँ पर वह अपनी देह की राख को बिछाने को कहती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागमति के विरह में मध्य युगीन नारी की दासता का चित्रण

(क) पर्याप्त अधिकार नहीं: अपने पति की अनुगामी। अनुचर के रूप में।

(ख) स्वयं को कष्ट: पति के पद्मावती को ढूंढने हेतु जाने पर माँ और नागमति का रुदन तथा विरह में स्वयं को बहुत पतला कर लेना।

(ग) प्रिय की मोती की आस लगाए रखना तथा उसके प्रति प्रेम में स्वयं को समाप्त तक कर लेने की बात।

(घ) अपने विरह का आरोपण प्रकृति चित्रण पर कर लेना।

(ङ) मर्यादा पूर्ण भारयुक्त सांस्कृतिक मूल्यों को ढोना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह नागमति का विरह वर्णन कामायनी की श्रद्धा के प्रेम भाव के समतुल्य दिखाया गया है परंतु वर्तमान सबाल्टर्न साहित्य जगत में इसे नारी की दासता के रूप में देखा जाता है।

हालांकि जायसी मध्यकालीन कवि थे। उनके समय की अपनी सीमाएं थी। परंतु नागमति का विरह वर्णन का शैलीगत चित्रण उन्होंने जो किया है उस संदर्भ में शुक्ल जी भी कहते हैं कि नागमति का विरह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'राम की शक्तिपूजा' के भाषिक-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राम की शक्तिपूजा

→ निराला

→ 1936 ई.

→ अन्याय जिधर उधर है शक्ति

→ शक्ति की कुछ मौलिक कल्पना।

भाषिक सौंदर्य

→ शुरुआत की 18 पंक्तियां हिन्दी साहित्य जगत की अनुपम उपलब्धियां।

"रवि हुआ अस्त,
रह गया राम रावण का
अपराजेय समर ।।"

→ छंद मुक्ति योजना - + लंबा प्रगीत

→ खड़ी बोली में काव्य गीत रचना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) तत्सम भाषा का प्रयोग

(4) ध्वनात्मकता तथा नादयोजना की सर्वश्रेष्ठ कृति
"रावण अट्टहास खल खल खल"

(5) शब्दों के चयन की शानदार शैली तथा नए शब्दों का सृजन भी निराला ने किया।
यथा - अमानिशा

(6) प्रतीकात्मक अर्थों की शब्द शैली
- रामायण (मिथक)
- निराला के स्वयं का आत्मसंघर्ष (दुर्घटनाएं)
- तत्कालीन गांधी आंदोलन की व्याख्या।

(7) तत्सम के साथ साथ तद्भव एवं देशज शब्दों की भी प्राप्ति।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सवेदनागत स्तर के साथ ही शिल्प मे भाषा योजना पर निराला की अद्भुत पकड़ राम की शक्ति पूजा को सर्वश्रेष्ठ रचना मे शामिल करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'असाध्य वीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

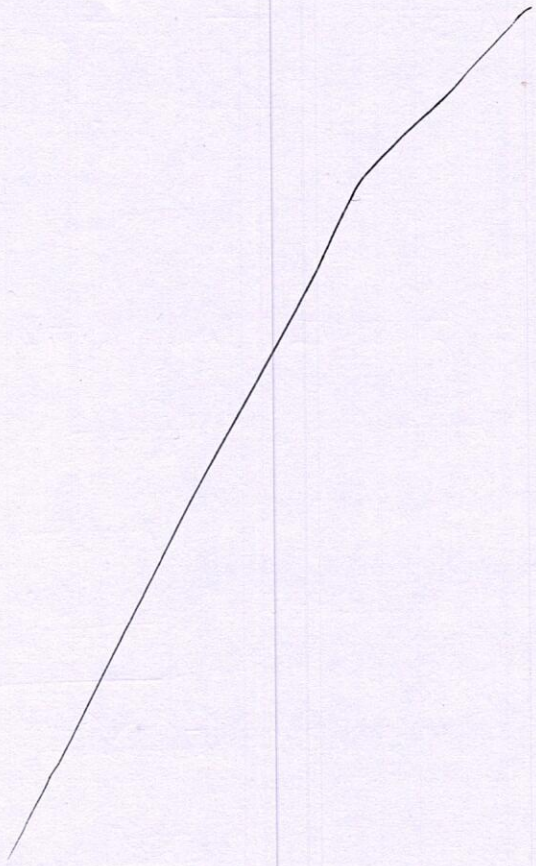

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

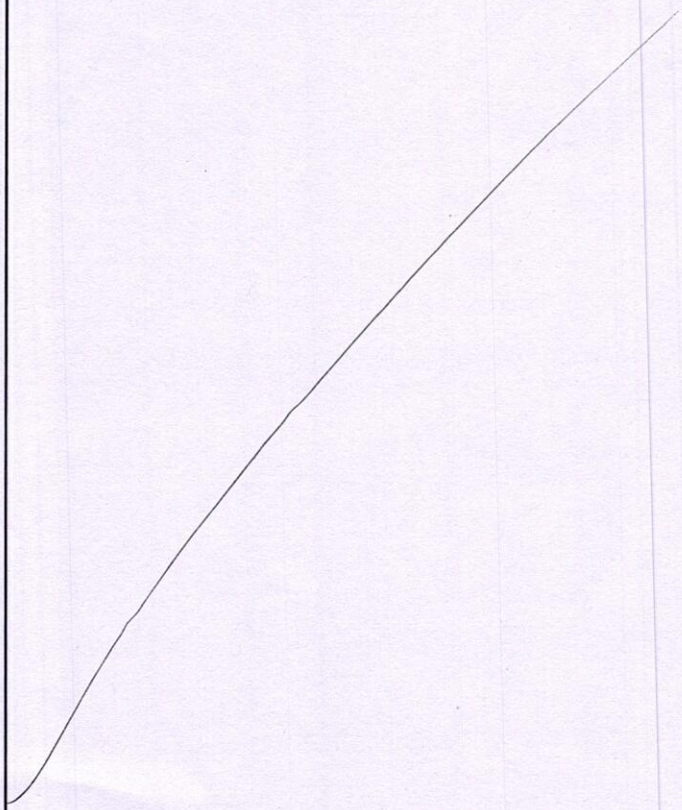

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सृजनात्मक रहस्यवाद' के परिप्रेक्ष्य में 'असाध्य वीणा' कविता की अंतर्वस्तु का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation